International Journal of Advanced Education and Research
www.alleducationjournal.com
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 25-02-2021, Accepted: 10-03-2021, Published: 30-03-2021
Volume 6, Issue 2, 2021, Page No. 42-45

माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का, सामाजिक विषय में निष्पत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन– अमरोहा जनपद के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. योगेश्वर प्रसाद शर्मा[1], डॉ. समी उर्रहमान खान सूरी[2], रूपाली[3]

[1] शोध–निर्देशक, असि0 प्रो0, शिक्षा विभाग, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] सह–निर्देशक, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

[3] शोधकर्ती (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

यह शोध अध्ययन अमरोहा जनपद उत्तर प्रदेश के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर किया गया। शोधकर्ती ने अपने शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400 (200 छात्र + 200 छात्रायें) को सम्मिलित किया। शोध अध्ययन में अमरोहा जनपद के 20 (10 शहरी एवं 10 ग्रामीण) प्राईवेट माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया। शोध अध्ययन में कक्षा 11 में अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। शोधकर्ती ने अपने शोध में विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों को सम्मिलित किया है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण (भौतिक, पारस्परिक विश्वास, संसाधन, शैक्षिक संसाधन तथा संयुक्त विद्यालयी वातावरण) तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति का अध्ययन करना तथा विद्यालयी वातावरण (भौतिक, पारस्परिक विश्वास, संसाधन, शैक्षिक संसाधन तथा संयुक्त विद्यालयी वातावरण) तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों में सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण को ज्ञात करने के लिए एम0एल0 शाह व अमित शाह द्वारा निर्मित एकेडमिक क्लाईमेट डेस्क्रीप्शन क्वाशनायर (ए0सी0डी0क्यू0) का प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति के लिए 10वीं कक्षा में सामाजिक विषय में प्राप्त अंकों को लिया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट– क्रान्तिक अनुपात तथा सहसम्बन्ध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर है। ग्रामीण विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा भौतिक विद्यालयी वातावरण में उत्तम हैं। शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास, संसाधन, शैक्षिक संसाधन तथा संयुक्त विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है। शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं। विद्यालयी वातावरण (भौतिक, पारस्परिक विश्वास, संसाधन, शैक्षिक संसाधन तथा संयुक्त विद्यालयी वातावरण) तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया।

कूट शब्दः विद्यालयी वातावरण, सामाजिक विषय निष्पत्ति, एकेडमिक क्लाईमेट डेस्क्रीप्शन क्वाषनायर (ए0सी0डी0क्यू0)

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होगी उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। शिक्षा की अवधारणा, स्वरूप एवं कार्य व्यापक है। शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह अति आवश्यक है कि वह जाने कि शिक्षा का सम्प्रत्यय क्या है? शिक्षा शब्द का प्रयोग षड्–वेदागों में से एक वेदांग के लिये प्रयुक्त हुआ है। उस समय शिक्षाशास्त्र का प्रयोजन वेदों की ऋचाओं का शुद्ध उच्चारण सिखाना है।

सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा का अर्थ है– प्रशिक्षण, संवर्द्धन और पथ–प्रदर्शन करने का कार्य। इस प्रकार एजुकेशन का सर्वमान्य अर्थ हुआ बालक की जन्मजात शक्तियों या गुणों को विकसित करके उसका सर्वांगीण विकास करना।

मनुष्य और समाज का घनिष्ठ एवं अनिवार्य सम्बन्ध है। मनुष्य का जन्म पालप–पोषण तथा विकास समाज में और समाज के सहयोग से होता है। समाज की उन्नति भी मनुष्य के सहयोग के बिना असम्भव है। सम्बन्ध की इस अनिवार्यता के कारण मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है। व्यक्ति और समाज में किसका स्थान ऊँचा है? इस विषय पर बहुत वाद–विवाद होने के पश्चात् प्रायः सभी विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि दोनों एक–दूसरे के लिये अनिवार्य एवं अभिन्न अंग हैं। समाज व्यक्ति के विकास के लिये अनेक प्रकार की समस्याओं का निर्धारण करता है और व्यक्ति उन समस्याओं से शिक्षित एवं प्रेरित होकर समाज को उसकी रूढ़ियों से मुक्त करता हुआ उसे विकास की नई दिशाओं की ओर अग्रसर करता है। व्यक्ति एवं समाज में यह आदान–प्रदान का क्रम प्राचीन काल से चला आ रहा है। सभ्यता, संस्कृति, विज्ञान तथा टैक्नॉलोजी का विकास वस्तुतः इसी आदान–प्रदान का परिणाम है। समाज अपनी जिन समस्याओं के द्वारा व्यक्ति को स्वस्थ विकास की ओर अग्रसर करता है, उनमें से प्रमुख है–विद्यालय। 'विद्यालय' एक ऐसी सामाजिक संस्था है, जिसके माध्यम से मनुष्य समाज की संरचना, उसकी कार्य प्रणाली, रीति–रिवाजों, परम्पराओं, मूल्यों एवं भविष्य की चुनौतियों का ज्ञान प्राप्त करता है। विद्यालय के द्वारा ही उसे अपने आपको सामाजिक वातावरण में समायोजित करने की शिक्षा प्राप्त होती है और सामाजिक समस्याओं का समाधान करने की प्रेरणा मिलती है। यदि यह कहा जाये कि व्यक्ति के सामाजीकरण का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन विद्यालय है तो उसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हो चुके हैं, जिन्होंने सामाजिक अध्ययन की शिक्षा की आवश्यकता प्रदर्शित की है। यहाँ स्वतः ही यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि वे परिवर्तन कौन–कौन से हैं, जिन्होंने भारतीय

समाज की काया को पलट दिया है। इसके अन्तर्गत प्रजातान्त्रिक शासन की स्थापना, औद्योगिक प्रगति एवं वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव, कल्याणकारी राज्य, समाजवादी राज्य, सर्वोदय तथा ग्राम–पंचायत की व्यवस्था एवं विभिन्न समस्यायें परिवर्तन आते हैं।

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने को सबसे बेहतर साबित करना चाहता है। बालक की शैक्षिक निष्पत्ति को कई कारक प्रभावित करते हैं। जिनमें विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की निष्पत्ति को बढ़ाने में सहायक होता है। विद्यालय में विद्यार्थियों को सुनियोजित ज्ञान प्रदान किया जाता है। वैसे तो विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति उनकी अपनी बौद्धिक योग्यता, पारिवारिक वातावरण आदि पर आधारित होती है पर विद्यालय व परिवार बालक की अन्तर्निहित योग्यता को विकसित करते हैं तथा उन्हें सही मार्गदर्शन देते हैं। जिससे वे उच्च शैक्षिक निष्पत्ति को प्राप्त कर सकें। शैक्षिक निष्पत्ति से तात्पर्य सामाजिक विषय में विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान, कौशल, अनुप्रयोग आदि से हैं। शैक्षिक प्रक्रिया के अन्तर्गत शैक्षिक निष्पत्ति को जानने का प्रयास निष्पत्ति परिक्षणों के माध्यम से किया जाता है। परिक्षाओं में शिक्षण प्रक्रिया में मूल्यांकन को एक आवश्यक साधन माना जाता है। परिक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान बोध, कौशल आदि के स्तर पर मापन होता है तथा इससे प्राप्त परिणामों के आधार पर विद्यार्थियों के अध्ययन एवं अभ्यास की गति एवं पद्धति में सुधार लाया जा सकता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

शोध अध्ययन में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के अभाव में अनुसंधान कर्ता उस दिशाविहीन यात्री के सामान है जो स्वयं नहीं जानता कि उसे किस दिशा में आगे बढना है। सम्बन्धित साहित्य अनुसंधान कर्ता के लिए उस प्रकाश पुंज के समान होता है। जिसका अनुसरण करते हुए वह अपने लक्ष्य तक पहुंचता है।

पाण्डा, भुजेन्द्रा नाथ, साहू, के0सी0 एवं साहू जे0 (1995) ने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। वित्तीय सहायता प्राप्त और वित्तविहीन विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक है। विभिनन प्रकार के वातावरण में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।

डेमर, इब्राहीम (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यालयी वातावरण में यदि नकारात्मक प्रभाव आ जाते हैं तो विद्यालयी वातावरण नकारात्मक शिक्षा के मूल्यों में बदल जाता है। नकारात्मक विद्यालयी वातावरण छात्रों की उपलब्धि पर अवांछनीय प्रभाव डालता है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

विद्यालयी वातावरण

विद्यालयी वातावरण से हमारा तात्पर्य विद्यालय के भौतिक वातावरण, पारस्परिक विश्वास, विद्यालय के संसाधन तथा शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता से है। विद्यालय का शाब्दिक अर्थ है कि विद्या का आलय अर्थात् विद्या का घर, वह स्थान जहाँ विद्या की व्यवस्था होती है।

निष्पत्ति/उपलब्धि

शिक्षा प्रक्रिया को संचालित करने वाले व्यक्ति विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण–अधिगम क्रियाओं का आयोजन करते हैं। शैक्षिक निष्पत्ति से तात्पर्य इन शिक्षण उद्देश्य की प्राप्ति से है। विद्यार्थियों ने इन शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है, यही उनकी निष्पत्ति को बताता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों द्वारा कक्षा 10 में प्राप्त सामाजिक विषय के अंकों को निष्पत्ति के रूप में लिया गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. (क) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का भौतिक विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
(ख) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
(ग) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
(घ)माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
(ड) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का संयुक्त विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं को लिया गया–

1. (क) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
(ख) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
(ग) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालयी संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
(घ) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
(ड) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी

संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में अमरोहा जनपद के 20 (10 शहरी एवं 10 ग्रामीण) प्राईवेट माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल अमरोहा जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400 (200 शहरी एवं 200 ग्रामीण) विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को सम्मिलित किया गया।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 11 में अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों को सम्मिलित किया गया।

शोध अभिकल्प

शोध विधि एवं न्यादर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया एवं न्यादर्श के रूप में अमरोहा जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 400 (200 शहरी+200 ग्रामीण) विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण को ज्ञात करने के लिए एम0एल0 शाह व अमिता शाह द्वारा निर्मित एकेडमिक क्लाईमेट डेस्क्रीप्शन क्वाशनायर (ए0सी0डी0क्यू0) का प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति के लिए 10वीं कक्षा में सामाजिक विषय में प्राप्त अंकों को लिया गया है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ती द्वारा एकत्रित किये गये आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट– क्रान्तिक अनुपात तथा सहसम्बन्ध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध निष्कर्ष

1. (क) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा भौतिक विद्यालयी वातावरण में उत्तम हैं। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है।
2. (ख) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में श्रेष्ठ हैं। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है।
3. (ग) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालीय संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा विद्यालयी संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में उत्तम हैं। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालयी संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है।
1. (घ) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शैक्षिक सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में श्रेष्ठ हैं। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है।
1. (ड) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा संयुक्त विद्यालयी वातावरण में उत्तम हैं। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा सामाजिक विषय निष्पत्ति में श्रेष्ठ हैं। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया है। अतः इससे पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत्

विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातवरण का सामाजिक विषय निष्पत्ति पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के भौतिक विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।" स्वीकृत की जाती है।

4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया है। अतः इससे पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी वातावरण का सामाजिक विषय निष्पत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पारस्परिक विश्वास सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।" स्वीकृत की जाती है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है। क्योकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया है। अतः इससे पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी संसाधन सम्बन्धी वातावरण का सामाजिक विषय निष्पत्ति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।" स्वीकृत की जाती है।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया है। अतः इससे पता चलता है कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी वातावरण का सामाजिक विषय निष्पत्ति पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालयी शैक्षिक संसाधन सम्बन्धी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।" स्वीकृत की जाती है।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया है। अतः इससे पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण का सामाजिक विषय निष्पत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संयुक्त विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।" स्वीकृत की जाती है।

भावी शोध कार्य हेतु सुझाव

1. यह शोध कार्य अमरोहा जनपद पर किया गया। इसे अन्य जनपदों, मण्डलों के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है।
2. शोधकर्ती ने अपने शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को ही शामिल किया है। यह शोध कार्य अन्य स्तर के विद्यालयों पर भी किया जा सकता है।
3. शोधकर्ती ने अपने शोध में विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक विषय निष्पत्ति चरों को सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त अन्य चरों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
4. शोधकर्ती ने अपने शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400 (200 छात्र + 200 छात्रायें) को सम्मिलित किया है। भविष्य में इससे अधिक विद्यार्थियों को लिया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल आर0सी0 (2009) शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा पब्लिकेशन, शकरपुर, दिल्ली।
2. राय, पारसनाथ (2011–12) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
3. कौल लोकेश (2007) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नोएडा।
4. बुच, एम0बी0 (1972–78) फर्स्ट सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन, सोसायटी फार एजूकेशन रिसर्च एण्ड डेवलमेंट, बड़ौदा।
5. एम0एल0 शाह व अमिता शाह एकेडमिक क्लाईमेट डेस्क्रीप्शन क्वाशनायर, ए0सी0डी0क्यू0, अंकुर साईक्लॉजिकल एजेन्सी, लखनऊ।
6. चतुर्वेदी, एम0 (2009) "स्कूल एनवायरमेंट, एचिवमेंट, मोटिवेशन एण्ड एकेटमिक एचिवमेंट", इंडियन जर्नल ऑफ सोशल सांईस रिसर्च, वो0–6, नं02, अक्टू0–2009.